रचना-परिचय

शब्द

भाषा की समृद्धि उसकी शब्द संपदा पर निर्भर करती है। शब्दों के स्वरूपगत तथा अर्थगत वैविध्य से भाषा का सौंदर्य बढ़ता है और उसकी व्यंजकता में निखार आता है। "कनक-कनक तें सौ गुनी मादकता अधिकाय" जैसा कथन हिंदी में इसलिए हो सकता है क्योंकि इसमें कनक के दो अर्थ (सोना और धतूरा) होते हैं।

इस आधार पर शब्दों के प्रमुख पाँच प्रकार होते हैं -

(i) अनेकार्थक यानी एक शब्द के अनेक अर्थ वाले शब्द।
(ii) श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द
(iii) विपरीतार्थक शब्द
(iv) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
(v) पर्यायवाची शब्द

अनेकार्थक शब्द : ये वे शब्द होते हैं जिनके एक ही रूप से एक से अधिक अर्थ निकलते हैं।

द्रष्टव्य -

अंक	-	संख्या, गोद, चिह्न, खंड (नाटक में)।
अंबर	-	आकाश, वस्त्र।
अर्क	-	रस, सूर्य, अकवन नामक औषधीय पौधा।
अर्थ	-	अभिप्राय, निमित्त, धन, प्रयोजन।
अरुण	-	लाल, सूर्य का सारथी।
आम	-	एक फल, सामान्य।
कनक	-	स्वर्ण, धतूरा।
कल	-	अगला या पिछला दिन, चैन, यंत्र (मशीन)।
कुल	-	सब, वंश, संस्था, समूह।
खून	-	रक्त, हत्या।
गो	-	धरती, गाय, इंद्रिय।
गुण	-	विशेषता, धर्म, धागा।
घन	-	गाढ़ा, बादल, बड़ा, हथौड़ा।
जलज	-	कमल, शंख, मोती।
चारा	-	जानवर का भोजन, उपाय, केंचुआ।

तात	–	पिता, भाई ।
द्विज	–	पक्षी, ब्राह्मण ।
पट	–	किवाड़, परदा, वस्त्र, तख्त ।
पतंग	–	गुड्डी, सूर्य, एक कीड़ा (फतिंगा) ।
पय	–	दूध, जल ।
मधु	–	शराब, शहद, मीठा ।
विधि	–	रीति, कानून, ब्रह्मा ।
सर	–	शिर, तालाब ।
हार	–	माला, पराजय ।
हंस	–	सूर्य, एक जलपक्षी जो मानसरोवर झील में रहता है ।
अक्ष	–	आँख, सर्प ।
अरुण	–	लाल, सूर्य ।
खग	–	पक्षी, बाण ।
गुरु	–	शिक्षक, ग्रहविशेष ।
नाग	–	हाथी, साँप ।
मित्र	–	दोस्त, सूर्य ।
दंड	–	डण्डा, सजा ।

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द : नाम से स्पष्ट है कि ये शब्द सुनने में एक जैसे लगते हैं परंतु थोड़े अंतर के चलते इनके अर्थ सर्वथा भिन्न-भिन्न हो जाते हैं । वस्तुतः ये शब्द एक होते नहीं; सुनने में एक से लगते हैं । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

अंश	–	हिस्सा	अंस	–	कंधा
अंत	–	समाप्ति	अंत्य	–	अंतिम
अनु	–	पीछे	अणु	–	कण
अनल	–	आग	अनिल	–	हवा
आब	–	पानी, आभा	आप	–	तू का आदरसूचक
आसन	–	बैठने की वस्तु	आसन्न	–	निकट
अविहित	–	अनुचित	अभिहित	–	उल्लेख किया हुआ
अनुसार	–	अनुकूल	अनुस्वार	–	अनुनासिक का चिह्न (ं)
कुशासन	–	दोषपूर्ण शासन	कुशासन	–	कुश का आसन
कोस	–	दूरी का एक माप	कोष	–	खजाना
आदि	–	आरंभ	आदी	–	अभ्यस्त, अदरक

विपरीतार्थक शब्द : विपरीत यानी विरुद्ध अर्थ वाले शब्द । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

अस्त	–	उदय
अंत	–	आदि

अपना – पराया
अंधकार – प्रकाश
अमृत – विष
आय – व्यय
आदर – अनादर, तिरस्कार
आदान – प्रदान
आविर्भाव – तिरोभाव
आगमन – निगमन
अभिज्ञ – अनभिज्ञ
आयात – निर्यात
आकाश – पाताल
आस्तिक – नास्तिक
अपेक्षा – उपेक्षा
कृतज्ञ – कृतघ्न
खुशी – गम
जंगम – स्थावर
उत्कर्ष – अपकर्ष
सगुण – निर्गुण
उत्कृष्ट – निकृष्ट
क्रय – विक्रय
सकाम – निष्काम
अग्रज – अनुज ।
अधम – उत्तम ।
यज्ञ – विज्ञ, प्रज्ञ ।
अमृत – विष ।
अथ – इति ।
अनुग्रह – विग्रह ।
अतिवृष्टि – अनावृष्टि ।
अवनि – अम्बर ।
अनुकूल – प्रतिकूल ।
आर्द्र – शुष्क ।
आस्तिक – नास्तिक ।
आलोक – अंधकार ।
आधुनिक – प्राचीन ।

अभ्यंतर – बाह्य ।
इहलोक – परलोक ।
इष्ट – अनिष्ट ।
ईश्वर – जीव ।
उदार – कृपण ।
उपयोग – दुरुपयोग ।
इच्छा – अनिच्छा ।
उदात्त – अनुदात्त ।
उदयाचल – अस्ताचल ।
एड़ी – चोटी ।
ऐतिहासिक – अनैतिहासिक ।
उत्थान – पतन ।
कीर्ति – अपकीर्ति ।
कुरूप – सुरूप ।
करुण – निष्ठुर ।
कृत्रिम – प्रकृत ।
कर्मण्य – अकर्मण्य ।
कोप – कृपा ।
कृतज्ञ – कृतघ्न ।
कनिष्ठ – ज्येष्ठ ।
कुटिल – सरल ।
गुरु – लघु ।
गौरव – लाघव ।
गमन – आगमन ।
गगन – पृथ्वी ।
घात – प्रतिघात ।
चोर – साधु ।
जन्म – मृत्यु, मरण ।
जागरण – निद्रा ।
जड़ – चेतन ।
जल – स्थल ।
जटिल – सरल ।
जंगम – स्थावर ।
तीव्र – मंद ।

तुच्छ – महान ।
दिवा – रात्रि ।
दक्षिण – वाम, उत्तर ।
ध्वंस – निर्माण ।
नूतन – पुरातन ।
निरामिष – सामिष ।
निर्लज्ज – सलज्ज ।
निर्दय – सदय ।
निरक्षर – साक्षर ।
पंडित – मूर्ख ।
पक्ष – विपक्ष ।
परुष – कोमल ।
प्रमुख – सामान्य, गौण ।
प्रलय – सृष्टि ।
पुरस्कार – दंड, तिरस्कार ।
प्राचीन – नवीन, अर्वाचीन ।
प्रत्यक्ष – परोक्ष ।
बाह्य – अभ्यंतर ।
मुनाफा – नुकसान ।
रूपवान – कुरूप ।
रागी – विरागी ।
लौकिक – अलौकिक ।
लुप्त – व्यक्त ।
विशिष्ट – साधारण ।
विस्तृत – संक्षिप्त ।
विशेष – सामान्य ।
वसंत – पतझड़ ।
बहिष्कार – स्वीकार, अंगीकार ।
वृद्धि – ह्रास ।
विधवा – सधवा ।
विपत्ति – सम्पत्ति ।
वृष्टि – अनावृष्टि ।
सम – विषम ।
सजीव – निर्जीव, अजीव ।
सम्मुख – विमुख ।
सार्थक – निरर्थक ।
स्वतंत्रता – संयोग ।
संयोग – वियोग ।
सम्मान – निष्काम ।
सुलभ – दुर्लभ ।
स्मरण – विस्मरण ।
संतोष – असंतोष ।
सौम्य – उग्र, असौम्य ।
सुशील – दुःशील ।
स्वप्न – जागरण ।
शकुन – अपशकुन ।
श्रव्य – दृश्य ।
शोषक – पोषक ।
शुष्क – सिक्त ।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

जो प्रिय बोले	–	प्रियंवद
आया हुआ	–	आगत
नहीं आया हुआ	–	अनागत
जानने की इच्छा	–	जिज्ञासा
जिसके समान दूसरा न हो	–	अद्वितीय
जिसकी उपमा न मिले	–	अनुपम
बाएँ हाथ से तीर चलाने वाला	–	सव्यसाची
रोंगटे खड़े कर देने वाला	–	रोमांचक, लोमहर्षक
अन्य का किया याद रखने वाला	–	कृतज्ञ
अन्य का किया याद न रखने वाला	–	कृतघ्न
ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला	–	आस्तिक
ईश्वर की सत्ता में विश्वास न रखने वाला	–	नास्तिक
जिसकी परिमिति ज्ञात नहीं	–	अपरिमित
जिसका अंत न हो	–	अनंत
जिसकी सीमा न हो	–	असीम
जो पहले कभी नहीं हुआ	–	अभूतपूर्व
जिसका नाश निश्चित हो	–	नश्वर
स्वयं पर अवलंबित रहने वाला	–	स्वावलंबी
गुणों को ग्रहण करनेवाला	–	गुणग्राही
हृदय पिघला देने वाला	–	हृदयविदारक, हृदयद्रावक
व्याकरण जाननेवाला	–	वैयाकरण
जिसकी प्रतिज्ञा दृढ़ है	–	दृढ़प्रतिज्ञ
जल में विचरण करने वाला	–	जलचर (नभचर, थलचर ऐसे ही **हैं)**
द्वीप पर जन्म लेने वाला	–	द्वैपायन (पराशरपुत्र व्यास)
नया आया हुआ	–	नवागत

पर्यायववाची शब्द : एक ही अर्थ देने वाले अनेक **शब्दों** को पर्यायवाची कहा जाता है ।

अग्नि	–	अनल, पावक, हुताशन, आग, कृशानु आदि ।
पानी	–	जल, नीर, पय, वारि, तोय, उदक, **अंबु**, आब आदि ।
आकाश	–	गगन, नभ, व्योम, अभ्र आदि ।
पृथ्वी	–	धरती, मेदिनी, भू, धरा, धरणी, वसुंधरा आदि ।
समुद्र	–	उदधि, सागर, जलनिधि, पयोधि, नदीश आदि ।
गंगा	–	सुरसरि, मंदाकिनी, भागीरथी, जाह्नवी आदि ।
चंद्रमा	–	शशि, सुधांशु, सुधाकर, राकेश, **निशापति** आदि ।

सूर्य – दिवाकर, दिनमणि, दिनेश, विभाकर, मार्तण्ड आदि ।
कमल – सरसिज, पंकज, नलिन, राजीव, सरोज आदि ।
बिजली – चपला, विद्युत, सौदामिनी, दामिनी, तड़ित् आदि ।
सरस्वती – वीणापाणि, पुस्तकधारिणी, शारदा, ब्राह्मी, वागीश्वरी आदि ।
पर्वत – भूधर, नग, पहाड़, शैल, गिरि आदि ।
नदी – तटिनी, सरिता, सरि आदि ।
जंगल – वन, कांतार, अरण्य, कानन, विपिन आदि ।
सिंह – शार्दूल, केहरि, मृगराज, हरि आदि ।
शंकर – शिव, शंभु, उमापति, त्रिलोचन, महादेव, नीलकंठ आदि ।
राजा – भूप, भूपति, महीपति, नरेश, नृपति, नृप आदि ।
राक्षस – दनुज, दानव, असुर, निशाचर, दैत्य आदि ।
देवता – देव, सुर, अमर आदि ।
इन्द्र – महेंद्र, सुरपति, सुरेन्द्र, अमरेंद्र, पुरंदर आदि ।
गणेश – लंबोदर, गजवदन, गजानन, विनायक, महाकाय आदि ।
भौंरा – भ्रमर, भृंग, अलि, मधुप, मधुकर आदि ।
कामदेव – अनंग, मदन, मन्मथ, मार, कंदर्प, मनोज आदि ।
हाथी – गज, कुंजर, हस्ती, दन्ती, नाग आदि ।

मुहावरे

मुहावरे व्यंजना प्रधान पदबंध होते हैं । इनमें प्रयुक्त शब्दों के पारंपरिक अर्थ सर्वथा गौण पड़ जाते हैं और एक नया अर्थ ध्वनित हो आता है, जैसे – 'कलेजे का टुकड़ा' या 'आँखों का तारा' में प्रयुक्त कलेजा, टुकड़ा, आँख या तारा शब्द के पारंपरिक अर्थ सर्वथा उपेक्षित हो जाते हैं और दोनों मुहावरों का अर्थ हो आता है 'बहुत प्यारा' । ये व्यंग्यार्थ इन मुहावरों के साथ रूढ़ हो गए हैं । कुछ उदाहरण देखें –

अंगूठा दिखाना (समय पर धोखा देना, रूखाई पूर्ण इनकार) – पास में रुपए होने के बावजूद पाँच सौ रुपए के लिए उन्होंने साफ अंगूठा दिखा दिया ।

अंगूठा चूमना (खुशामद में स्तरहीनता तक उतर जाना) – अपना काम बनाने के लिए वह मंत्रीजी का अंगूठा चूमता रहता है ।

अक्ल का दुश्मन (महामूर्ख) – अक्ल का दुश्मन वह जिस डाली पर बैठा था उसे ही क़ाट रहा था ।

अपना उल्लू सीधा करना (स्वार्थसिद्धि करना) – अपना उल्लू सीधा करने के बाद वह साथ छोड़ चलता बना ।

आँखें दिखाना (धमकी देना) – मुझसे रुपए लेकर मुझे ही आँख दिखाते हो ।

आँखें खुलना (असलियत का बोध होना) – प्रायः ठोकर लगने के बाद ही आँखें खुलती हैं ।

आँसू पोंछना (दुख में सांत्वना देना) – धोखेबाज को दुख की घड़ी में आँसू पोंछने वाला भी कोई नहीं मिलता ।

कलेजे पर साँप लोटना (ईर्ष्या से जल उठना) – मोहन की तरक्की देखकर श्याम के कलेजे पर साँप लोटने लगा ।

कान खड़े होना (सचेत होना) – दोनों की बातों में अपना नाम सुनते ही मेरे कान खड़े हो गए ।

दाल में काला होना (स्थिति संदिग्ध होना) – वहाँ जयकुमार को देखकर ही मैं समझ गया था कि दाल में कुछ काला अवश्य है ।

ठंढे बस्ते में डालना (कार्रवाई नहीं करना) – उच्च शिक्षा सुधार समिति की रिपोर्ट को सरकार ने ठंढे बस्ते में डाल दिया है ।

कहावतें

मुहावरों की भाँति कहावतें भी अन्यार्थव्यंजक होती हैं, परंतु ये पदबंध नहीं पूर्णवाक्य होती हैं । जैसे – 'अधजल गगरी छलकत जाय' या 'चले न आवे आंगन टेढ़ा' । प्रयोग में मुहावरे वाक्य का अंग बन जाते हैं परंतु कहावतें एक वाक्य का स्वाभाविक अंग नहीं बन पातीं । उन्हें अलग से उद्धरण के रूप में जोड़ना पड़ता है । जैसे –

अपनी डफली अपना राग (सामूहिक चेतना का अभाव) – जिस परिवार में हर सदस्य अलग-अलग अपनी डफली अपना राग अलापने लगे उसका चलना मुश्किल होता है ।

अकेला चना भांड़ नहीं फोड़ता (अकेले बड़ा काम संभव नहीं होता) – गाँव में बढ़ती गुंडागर्दी को सर्वथा नापसंद करने के बावजूद वे क्या कर सकते हैं, अकेला चना भांड़ नहीं फोड़ता ।

आँख का अंधा नाम नयनसुख (कर्म और गुण के विपरीत काम) – नेताजी कहलाते हैं परंतु लोगों को आपस में लड़ाते फिरकर आँख का अंधा नाम नयनसुख की कहावत चरितार्थ करते रहते हैं ।

उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे (अपराधी का ही आक्रामक हो जाना) – विलंब से आकर मुझपर ही बिगड़ते हो ? ठीक ही कहा गया है – उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे ।

ऊँची दुकान फीके पकवान (नाम बड़ा और काम छोटा) – इतने बड़े आदमी के यहाँ ऐसा निम्नकोटि का भोजन मिलना ऊँची दुकान फीका पकवान नहीं तो और क्या है ?

ऊँट के मुँह में जीरा (बड़ी आवश्यकता और अत्यल्प आपूर्ति) दो करोड़ की परियोजना में सहायता के लिए पचास लाख का सहयोग ऊँट के मुँह में जीरा ही तो है ।

कोउ नृप होउ हमहिं का हानी (बड़े के हानि-लाभ से अपना कोई मतलब न होना) – जिलाधीश खाँ साहब रहें या लाल साहब आ जाएँ, मुझ किरानी के लिए तो कोउ नृप होउ हमहिं का हानी ।

गुड़ खाकर गुलगुले से परहेज (दिखावटी संयम) – मनोहर घूस लेते हैं पर पैरवी करने को तैयार नहीं हैं; इसे ही कहते हैं गुड़ खाकर गुलगुले से परहेज ।

गोद में लड़का, नगर में ढिंढोरा (निकट पड़ी चीज के लिए अन्यत्र भटकना) – 'गोदान' घर में ही मिला, लेकिन राम बाबू ने पचास जगह फोन पर पूछकर गोद में लड़का नगर में ढिंढोरा की कहावत चरितार्थ कर दी ।

संक्षेपण

'संक्षेपण' शब्द का अर्थ होता है छोटा (संक्षेप) करना । संक्षेपण के माध्यम से अधिक से अधिक

विचारों, भावों और तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है । इसमें मूल की आवश्यक बातों को ही रखा जाता है । अनावश्यक बातें छाँट कर निकाल दी जाती हैं ।

संक्षेपण की विशेषता :

1. दिए गए गद्यांश की कुल शब्द संख्या की एक तिहाई शब्द संख्या में इसका होना अनिवार्य है ।

2. आवश्यक होता है कि दिए गए गद्यांश और संक्षिप्त अंश दोनों की शब्द संख्या का निर्देश नीचे दाहिनी ओर कर दिया जाए ।

तात्पर्य यह कि संक्षेपण के तीन भाग होते हैं – (क) शीर्षक (ख) एक तिहाई शब्द संख्या में संक्षिप्त अंश (ग) दिए गए गद्यांश और संक्षिप्त अंश की शब्द संख्या का उल्लेख ।

संक्षेपण की विधि :

1. दिए गए गद्यांश के शब्दों की सही गिनती कर लें ।
2. उस संख्या के एक तिहाई हिस्से को निकाल लें ।
3. दिए गए गद्यांश को ध्यान से एकाधिक बार पढ़ें ताकि उसका कथ्य पूर्णतः समझ में आ जाए ।
4. एक तिहाई शब्द संख्या में उस गद्यांश का संक्षिप्त रूप आप इस तरह प्रस्तुत करें कि उसका कथ्य स्पष्ट हो जाए ।
5. शब्द संख्या निकालने के लिए और संक्षेपीकरण के लिए आप परीक्षा में 'रफ' भी कर सकते हैं ।
6. संक्षेपण में शब्दों की गिनती में आप सामासिक शब्द को एक मानें, यदि वह सामासिक चिह्न (-) के साथ लिखा गया हो । यदि सामासिक चिह्न का प्रयोग नहीं है और वे पद अलग-अलग लिखे गए हैं तो उन्हें आप एक नहीं मानें ।
7. संज्ञा के साथ विभक्तियों को अलग लिखा जाता है, इसलिए आप उन्हें अलग शब्द मानें । जैसे– 'राम की', कमरे में', 'हाथ से' आदि । सर्वनाम के साथ विभक्ति मिलाकर लिखी जाती है इसलिए वहाँ दोनों के सम्मिलित प्रयोग को एक मानें; जैसे – 'आपकी पुस्तक', मेरी समझ, आप की समस्या, उनकी इच्छा ।

पल्लवन

किसी संक्षिप्त सूक्ति या गूढ़ कथन को समझाने के लिए उसे कुछ विस्तार में प्रस्तुत करने की क्रिया को पल्लवन कहा जाता है । पल्लवन गद्यात्मक कथन का भी होता है और पद्यात्मक उक्ति या सूक्तियों का भी, परंतु इसकी सीमा है कि यह प्रायः एक अनुच्छेद से अधिक का नहीं होना चाहिए । इसमें शीर्षक विधान नहीं होता । जैसे – "कविता का उद्देश्य हमारे हृदय पर प्रभाव डालना होता है ।" ।

इस उक्ति का पल्लवन हम इस तरह करेंगे –

कविता में हृदय पक्ष प्रधान होता है, उसमें भावना प्रमुख होती है, इसलिए उसकी सफलता भी हृदय पर प्रभाव डालने में ही है । जरूरी नहीं कि कविता गद्य की तरह विचारों की दुनिया में हमें ले जाए । 'पृथ्वी क्या तुम कोई स्त्री हो' – यह काव्य पंक्ति हमारे भीतर पृथ्वी और स्त्री दोनों के प्रति गहरी संवेदना जगाती है और उसे विस्तार देती है ।

अनुच्छेद

किसी विषय पर व्यक्त विचार-प्रवाह के एक खंड अथवा लघु वाक्य समूह को अनुच्छेद कहा जाता है । अनुच्छेद लेखन में सर्वप्रथम ध्यान देना चाहिए कि इसकी विषय-वस्तु कोई वस्तु या व्यक्ति भी हो सकता है और कोई उक्ति भी । निबंध, कहानी, संस्मरण, भाषण आदि विधाओं में अलग-अलग अनेक अनुच्छेदों में विचार व्यक्त किए जाते हैं । भाषा-रचना में अनुच्छेद लेखन का अभ्यास किसी विषय पर केंद्रित वैचारिकता तथा क्रमबद्धता की प्रवृत्ति को पुष्ट करता है ।

अनुच्छेद को अंग्रेजी में 'पैराग्राफ' कहा जाता है । इसके लेखन में ध्यान रखना चाहिए कि दिए गए विषय पर एक ही अनुच्छेद लिखा जाए । जैसे - 'कर्म प्रधान बिस्व करि राखा'

संसार को कर्मभूमि कहा गया है, क्योंकि इसमें सबकुछ कार्य-कारण संबंध से ही संभव होता है। बिना कार्य किए कोई परिणाम संभव नहीं हो सकता है और परिणाम की प्राप्ति ही जीवन का उद्देश्य होता है, चाहे वह परिणाम अर्थ के रूप में प्राप्त हो या यश के रूप में । भाग्य या संयोगवश भी कुछ होता है तो प्रकृति उसमें भी निमित्त के रूप में किसी न किसी कर्म को बीच में खड़ी कर ही देती है। कर्म की प्रधानता इस विश्व की सबसे बड़ी सच्चाई है । इसके सहारे ही विश्व का चलना संभव हो पाता है ।

भावार्थ

भाव और **अर्थ** इन दो शब्दों से बना है 'भावार्थ' । भावार्थ का तात्पर्य होता है भावात्मक अर्थ । इसे भाव का स्पष्टीकरण भी कह सकते हैं । इसकी कतिपय विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

भावार्थ दिए गए गद्यांश या पद्यांश से कम आकार में लिखना होता है । इसमें समास शैली में लेखन की दक्षता बड़े काम की सिद्ध होती है । संक्षेपण से इसकी भिन्नता यह होती है कि इसमें शब्दों का कोई निर्धारण और शीर्षक की कोई आवश्यकता नहीं होती और उससे समानता यह होती है कि इसमें भी पूर्णत: अपनी भाषा में कथ्य या व्यंग्य स्पष्ट करना होता है । जैसे -

"मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखें तरेरती हुई बोली - कर चुके दूसरा उपाय ! सुनूँ, कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल ? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मरकर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो ।"

इस गद्यांश का भावार्थ इस प्रकार किया जा सकता है -

मुन्नी ने असहमति और विरोध के साथ दूसरे उपाय की बात पर अविश्वास व्यक्त किया, क्योंकि मुफ्त में कंबल मिलना असंभव था और पास में पैसे बच नहीं रहे थे । बकाये की अंतहीनता से क्षुब्ध वह खेती छोड़ देने का प्रस्ताव कर देती है ।

आशय

आशय का अर्थ कथ्य यानी उद्देश्य होता है । यानी दिए गए अंश का अपनी भाषा में उद्देश्य स्पष्ट कर देना ही आशय लेखन है । इस अर्थ में यह संक्षेपण तथा भावार्थ दोनों से भिन्न हो आकार की दीर्घता की छूट प्राप्त कर लेता है । यानी यह दिए गए अंश से बड़ा भी हो सकता है । आशय लेखन को ही अर्थ स्पष्टीकरण भी कहा जाता है । जैसे -

"मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखें तरेरती हुई बोली - कर चुके दूसरा उपाय ! सुनूँ कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल ? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर कर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो।"

इस गद्यांश का आशय इस प्रकार लिखा जा सकता है -

मुन्नी उससे एकदम सहमत नहीं हुई । यही नहीं उसने विरोध भी जताया । उसने स्पष्ट जानना चाहा कौन उपाय होगा । उसे पता था कि इसके अलावा अन्य कोई पैसा घर में बच नहीं रहा है और बिना पैसे के मुफ्त में कोई कंबल नहीं देगा । बकाया चुकाते जाने को अंतहीन समस्या बताती हुई वह खेती को अंततः छोड़ देने का प्रस्ताव करती है यानी उसके अनुसार खेती से कोई लाभ नहीं ।

सारांश

सारांश सार और अंश इन दो शब्दों के मेल से बना है । सार का अर्थ है मुख्य या मूल वस्तु । यानी किसी बड़ी कथात्मक रचना या विवरण के मुख्य अंशों का संक्षेप में प्रस्तुतीकरण ही सारांश है । इस तरह यह प्रस्तुत गद्यांश या रचना से अनिवार्यतः लगभग तिहाई या उससे भी कम आकार में प्रस्तुत किया जाता है । सारांश में शब्दों की संख्या की कोई सीमा निश्चित नहीं होती ।

व्याख्या

व्याख्या में पल्लवन की ही तरह विस्तार किया जाता है । व्याख्येय उक्ति गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों हो सकती है । गद्य में भी वह उक्ति-कथात्मक रचना - कहानी, उपन्यास आदि - या निबंध आदि किसी की भी हो सकती है । इसकी संरचना की कुछ निश्चित शर्तें होती हैं ।

1. व्याख्या में रचना का और प्रसंग का उल्लेख प्रथमतः होना चाहिए ।
2. रचनाकार-प्रसंग-निर्देश के उपरांत दिए गए अंश का भाव और कथ्य स्पष्ट करना चाहिए । यानी उसका आशय स्पष्ट करना चाहिए ।
3. व्याख्या का तीसरा चरण दिए गए अंश की विशेषता के संक्षिप्त कथन की होती है । भाषा, अलंकार, रस, छंद आदि के अलावा अन्य महत्त्व या दोष भी इसके अंतर्गत आते हैं । जैसे -

व्याख्येय पंक्ति : "बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है।"

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्ति प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' से ली गई है ।

सहना का बकाया चुकाने के लिए हल्कू अपनी पत्नी मुन्नी से जब कंबल खरीदने हेतु रुपए दे देने के लिए कहता है तो मुन्नी उसका विरोध करती है । विरोध करती हुई किसान जीवन की अंतहीन देनदारी की स्थिति पर क्षोभ व्यक्त करती हुई वह प्रस्तुत कथन करती है ।

फसल से बचे रुपए हल्कू और मुन्नी ने कंबल खरीदने के लिए रखे थे परंतु वे रुपए बकाया चुकाने में निकले जा रहे थे । हर वर्ष की इस बचतविहीन स्थिति पर क्षोभ व्यक्त करती हुई मुन्नी कहती है कि इससे तो यही सिद्ध होता है कि उनका संपूर्ण जीवन खेती करने और उससे प्राप्त सारे रुपए बकाया चुकाने में ही लग जाएगा । ऐसा लगता है जैसे उनके जीवन का यही एकमात्र उद्देश्य है ।

मुन्नी के इस कथन में सर्वप्रथम उसका विरोध व्यंजित होता है कि यह स्थिति अब उसे स्वीकार नहीं है । इस उक्ति से तत्कालीन जमींदारी तथा महाजनी व्यवस्था में किसान जीवन की कर्जदारी की

अंतहीन स्थिति का भी परिचय मिलता है । 'बाकी' तथा 'जनम' जैसे लौकिक भाषा प्रयोग से मुन्नी की भाषिक स्वाभाविकता, उसके भीतर के क्षोभ का सशक्त प्रकटीकरण तो होता ही है, साथ ही उसके जीवन यथार्थ का भी पता चलता है ।

निबंध

निबंध वह गद्य विधा है जिसमें किसी विषय विशेष से संबंधित विचार व्यवस्थित और सुसंबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं ।

व्यक्तिगत निबंध (ललित निबंध) और वस्तुगत (वैचारिक) निबंधों के विषय क्षेत्र के अनुसार अनेक भेदोपभेद हो जाते हैं । हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि निबंध के विषय अनंत हो सकते हैं ।

निबंध लेखन में दो बातें प्रमुख होती हैं । पहली यह कि दिए गए विषय के संबंध में आपका अपना विचार हो । और दूसरी यह कि आपके पास विचार व्यक्त करने के लिए अपनी भाषा हो । इसलिए हमेशा यही प्रयास होना चाहिए कि किसी विषय के संबंध में विभिन्न कोणों से विचार करने की प्रवृत्ति विकसित की जाए और विचार व्यक्त करने के लिए अपनी भाषा को उन्नत किया जाए ।

1. दिए गए विषय पर सबसे पहला जो विचार ध्यान में आए उससे ही लेखन का प्रारंभ कर दीजिए।
2. एक विचारखंड को एक ही अनुच्छेद में लिखें ।
3. हमेशा ध्यान रहे कि आपके अपने विचार और अपनी स्वाभाविक भाषा का सबसे अधिक महत्त्व होता है ।
4. आप उद्धरण दे सकते हैं, परंतु संक्षिप्त दें और उन्हें स्वतंत्र अनुच्छेद में लिखें ।
5. यदि शब्द संख्या निर्धारित है तो उसका ध्यान रखते हुए सौ में दस-पंद्रह शब्दों की कमी या अधिकता से ज्यादा की स्वतंत्रता नहीं बरतें ।

पत्र लेखन

पत्र यानी चिट्ठी के पारिवारिक, व्यावसायिक, कार्यालयी और संपादकीय अनेक रूप या भेद हैं । इनके उपभेदों की संख्या बहुत आगे तक जाती है ।

पत्र के पाँच अंग होते हैं, ये हैं -

1.	संबोधन और अभिवादन	:	प्रणाम, आशीष, प्रेम आदि ।
2.	स्थान और तिथि	:	स्थान के नीचे तिथि ।
3.	कथ्य (विषय-वस्तु)	:	संबोधन के बाद और अपना नाम-पता लिखने के पहले तक ।
4.	समापन	:	नीचे दाहिने अपना नाम, पता
5.	पत्र पाने वाले का पता	:	पत्र शुरू करते ही 'सेवा में' आदि संबोधन के साथ ।

(क) **पारिवारिक पत्र** : परिवार के अलावा मित्र, संबंधी या अन्य किसी परिचित-अपरिचित के कुशलक्षेम, सूचना आदि के लिए लिखे गए पत्र इस वर्ग में आते हैं ।

(ख) **व्यावसायिक पत्र** : व्यावसायिक पत्रों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है । कोई सामान मँगाने के लिए किसी दुकानदार या कंपनी को लिखे व्यावसायिक पत्र में यह क्रम होता है -

1. संबोधन - सेवा में,
2. पदनाम - पता
3. कथन - प्रस्तुतीकरण
4. समापन - 'भवदीय' के साथ अपना नाम-पता ।

(ग) कार्यालयी पत्र : इसका व्यवहार कार्यालयों में होता है । इसका ही एक रूप आवेदन पत्र भी होता है । आवेदन पत्र में निम्नलिखित क्रम रहता है -

1. संबोधन - सेवा में; उसके नीचे पदनाम और पता ।
2. विषय - यानी कथ्य का संक्षिप्त पर स्पष्ट उल्लेख ।
3. महाशय या महोदय
4. कथ्य : स्पष्ट, संक्षिप्त और प्रचलित भाषा में ।
5. समापन : 'विश्वासभाजन' के साथ सबसे नीचे दाहिने अपना नाम-पता और बाएँ तिथि ।

(घ) संपादकीय : किसी समाचारपत्र या अन्य पत्र-पत्रिका के संपादक के नाम यह पत्र लिखा जाता है । इसमें निम्नलिखित क्रम होते हैं -

1. संबोधन - सेवा में, के नीचे पत्र या पत्रिका का नाम और पता । यथासंदर्भ दैनिक, साप्ताहिक आदि का भी उल्लेख हो ।
2. प्रारंभ - "मैं आपके पत्र के माध्यम से.......... का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ ।" के साथ ।
3. कथ्य - स्पष्ट, सरल भाषा में पूरा विवरण ।
4. समापन - 'भवदीय' के साथ अपना नाम और संक्षिप्त पता ।

◆ ◆ ◆